प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय को प्रतिनिधि चाहिए
पत्रकारिता के साथ सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक-अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें- 91 8839797448/942443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधिः पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ | अंक- २९२ | भोपाल, २ जून, डाक ३ जून २०२६ | भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित | पृष्ठ -८ | मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

जो करते हैं झुठी प्रशंसा चाटुकार कहलाते हैं ।
उनकी मीठी बातों से सज्जन व्यक्ति कतराते हैं ।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-१०४

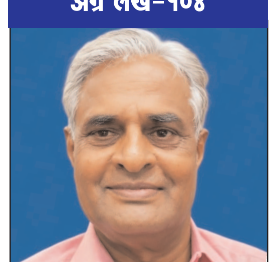

कैलाश आदमी

एक समय था जब इंसान स्वयं की प्रशंसा से दूर रहता था। बुजुर्ग कहते थे- जहाँ भी स्वयं की प्रशंसा होती दिखे, वहाँ से क्षमा मांगकर चले जाना चाहिये, रुके रहने पर गर्वानुभूति होने लगती है। किसी की प्रशंसा करना उसकी अनुपस्थिति में ही करना श्रेयस्कर है, अन्यथा प्रशंसा चाटुकारिता में परिवर्तित हो जाती है।

वर्तमान युग में मनुष्य प्रशंसा का भूखा प्रतीत होता है। इससे दूर होने के लिए हमें चहिए कि अपने आराध्य ईश्वर या निसर्ग की नियमित सेवा-पूजा के अतिरिक्त, कभी शुद्ध अंतःकरण से उसे धन्यवाद भी दें, कि उसने हमें मानव के रूप में जन्म दिया!

जो लोग भगवत गीता के मर्म को समझते है वे स्थितप्रज्ञ तथा सूत्यनिष्ठ होते हैं। ऐसे व्यक्ति को प्रशंसा की कोई ललक नहीं होती, वह इससे तटस्थ ही रहता है। प्रशंसा, मिथ्याचारी व्यक्ति का गुप्तास्त्र है जो वह अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये प्रयुक्त करता है। छोटी-छोटी भूलों पर प्रताड़ित किये जाने वाले बच्चे, यदि अच्छा किये जाने पर प्रशंसित कर दिये जायें, तो वे भविष्य में सभ्य तथा सुसंस्कृत मनुष्य बन जाते हैं! मूर्ख व्यक्ति की यदि थोड़ी ही प्रशंसा कर दी जाये, तो वह स्वयं को विद्वान मान बैठता है। ? नारी का हृदय, श्रृंगार से अधिक प्रशंसा का भूखा होता है। इस लिए पुरूष नारी का दोहन करने में सफल हो जाता है। इससे पुरूष और नारी दोनों पतित हो जाते हैं।

अति प्रशंसा तथा चाटुकारिता मनुष्य को निम्नकोटि से भी अधम न्यूनकोटि तक ले जा सकती है तथा जिससे, मनुष्य का स्तर, एक पूँछ हिलाते श्वान से अधिक नहीं रह जाता। प्रशंसक अथवा चाटुकार जब व्यक्तिगत रूप से सामने आकर मिलें, तो समझ लेना चाहिये वे प्रशंसा के बहाने, अपना ही कोई निजी स्वार्थ साधने का प्रयास करेंगे। उनके इस कृत्य को जो मनुष्य समझ न सके, उसकी फिर इससे बड़ी मूर्खता अन्य न होगी।

इस प्रकार के लोग घातक कहे जाते हैं तथा इन्हें पाला बदलने में जरा भी देर नहीं लगती। ऐसे व्यक्ति अवसर पाते ही आँखें फेर लेते हैं, किसी अन्य जगह (जहाँ इनका नया स्वार्थ हो), ले जाते है और अपना मकसद पूरा करने के लिए वहाँ आँखें बिछाने लगते हैं।

भारत में ही नहीं दुनिया के कई देशों में विभिन्न प्रकार के पौराणिक-ऐतिहासिक ग्रन्थ, इस प्रकार के प्रमाणों से भरे पड़े हैं जिनमें अनेक ऐसे प्रशंसकों तथा चाटुकारों के नाम दर्ज हैं, जिनके कारण बड़े-बड़े महायुद्ध हुए, बड़ी-बड़ी राजसत्ताओं का पतन हुआ तथा इन्हीं की कूटनीतियों के कारण, करोड़ों-अरबों निर्दोष प्राणियों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। यह छोटी बात नहीं है, समूची मानव सभ्यता पर गहरा कलंक है! पर सोचता कौन है ? ऋषि-मुनि, ज्ञानीजनों तथा दार्शनिकों, विचारकों आदि ने हर युग में अपने प्रयासों द्वारा सभ्य समाज को चेताने तथा ऐसे त्जात्य वर्ग से सदा सावधान रहने की आवश्यकता पर बल दिया है, पर इनकी चतुराई उनकी नीतियों पर भी भारी पड़ती दिखाई दी !

वर्तमान के लिये अजीम शायर का शेर ही काफी होगा-बरबादी-ए-गुलशन के खातिर बस एक ही उल्लू ही काफी है, हर शाख पे उल्लू बैठा है, अंजाम-ए-गुलिस्ताँ क्या होगा ?

आज कल सनातन याने पुरातन भारतीय सभ्यता की बड़ी चर्चा हो रही है। खास कर केंद्र और अधिकांश राज्यों में सत्ता रूढ़ भाजपा के अधिकारी हिन्दु धर्म को सनातन कहकर वोट बटोरने में कामयाब हो रहे हैं। भाजपा की मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक और प्रचारक बताते हैं कि सिन्धु नदी के किनारे बसे हुये मोहनजोदडो हड़प्पा के विलुप्त होने के बाद हिन्दु नदी के किनारे बसे हुए लोग हिन्दु कहलाये और यही से सनातन या सबसे पुराने धर्म का उदय हुआ।

मनुस्मृति में कहा गया कि मनुष्य के चार वर्ण है- ब्राहम्ण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राहम्ण को सबसे ऊंचा बताया गया। उसका काम था धर्म के प्रति लोगों को जागरूक करना जबकि क्षत्रिय का काम रक्षा करना, वैश्य का काम व्यापर और शूद्र का काम ब्राहम्ण, क्षत्रिय व वैश्य जनों की सेवा और खेती व अन्य ऐसे काम करना जिनमें श्रम लगता है। इसे ही सनातन संस्कृति और सभ्यता कहा गया। शूद्र को अन्य वर्णों की प्रशंसा करना उनका धर्म बताया गया जिससे आगे चलकर शूद्र बिमुख होने लगे और इससे नये-नये विवाद खड़े हुए तथा मुगलों और अन्य आक्रमणकारियों ने इसका लाभ उठाया। मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई किन्तु मुगलों में भी परस्पर झगड़े होन लगे और इसका लाभ आगे चलकर ईस्ट इंडिया कंपनी और फिर ब्रिटिश राज घराने ने उठाया। मुगल भी प्रशंसा के भूखे रहते थे और ब्रिटिश राज में भी प्रशंसा का दौर चला तथा इसका लाभ चाटुकार उठाते रहे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि प्रशंसा और चाटुकारिता ऐसी बुराईयां हैं जिनसे दूर ही रहना चाहिए। यह बात अलग है कि स्वतंत्र भारत में भी प्रशंसा और चाटुकारिता जैसी बीमारियां खूब फलफूल रही हैं जिनसे बचना चाहिए।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-
जो करते हैं झुठी प्रशंसा चाटुकार कहलाते हैं ।
उनकी मीठी बातों से सज्जन व्यक्ति कतराते हैं ।।

साहित्यकार बीबी मुखिया की कृति का लोकार्पण संपन्न

निर्दलीय सवांद

दार्जिलिग। शिक्षाविद एवम् प्रगतिशील कृषक लेखक तथा साहित्यकार बीबी मुखिया अलङ्कार की तीनवटा कृति का लोकार्पण समारोह तरुण संघ के तत्वावधान में आयोजित किया गया। यह आयोजन वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती विमला प्रधान जोशी के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुआ।इस अवसर पर श्रीमती जोशी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

सामाजिक व्यक्तित्व को रुपमा पनि सुकेपोखरी खण्ड क्षेत्रमा नै परिचित वयोवृद्ध लेखक मुखिया द्वारा रचित दुइवटा मौलिक कृतिसंगै साहित्यकार युवराज काफ्ले द्वारा सम्पादित उनको सम्मानित किया। श्री काफ्ले द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन भव्य और सभ्य कार्यक्रम अवधि में संपन्न हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित थे।

क्योंकि वह अछूत है *विनोदकुमार विमल

समाज से असुरक्षित
गांव से अपहेलित
खिल्ली उसकी उड़ा दी जाती है
जैसा कि वह अपकर्ष, अप्यस - पुरित
महत्त्वहीन है
क्योंकि वह अछूत है।
गांव से बाहर बस्ती है
ना खुशियाँ है
ना कोई सपने
जीते जी भी मरा है
वह कफनी में लपेटा है।
सम्मान से रहने की उसमें भी क्षमता है
उसके आँगन में सबका स्वागत है
वह घर से बाहर क्यों
तिरस्कृत और उपेक्षित है।
वह इतिहास का पन्ना नहीं
वर्तमान है
मौन नहीं मुखर है
सवाल अपमान का नहीं
सवाल सम्मान का है
सवाल हक का है ।
यह कैसी विडम्बना जहाँ
सम्मान से जीने का उसका अधिकार है
पर सम्मान की खातिर
वहीं रोना पड़ रहा ।

-काठमांडू, नेपाल

पूर्व सांसद स्व. कैलाश नारायण सारंग की जयंती पर आज मातृ-पितृ भक्ति दिवस

पूर्व संध्या पर हुआ वृद्धजन सम्मान, भजन संध्या व सेवा कार्यक्रम भी

निर्दलीय संवाद

भोपाल। भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देवतुल्य माना गया है। उनके सम्मान, सेवा और आशीर्वाद को जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य माना जाता है। इन्हीं संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भाजपा के संस्थापक सदस्य, पूर्व सांसद एवं जनसेवा के पर्याय रहे स्व. कैलाश नारायण सारंग की जयंती 2 जून को हर साल तरह देशभर में मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में श्रद्धा, सम्मान और सेवा भाव के साथ मनाई जाएगी।

सहकारिता, खेल और युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग के आह्वान पर इस अवसर पर देशभर में वृद्धजनों के सम्मान, सेवा और संस्कार जागरण के विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा विभिन्न राज्यों में वृद्धजनों के चरण पखारकर, उन्हें शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा। साथ ही सेवा, समर्पण और श्रद्धा के अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

इस तारतम्य में मंत्री श्री सारंग ने दैनिक निर्दलीय से कहा कि उनके पिता स्व. कैलाश नारायण सारंग का सम्पूर्ण जीवन समाज की सेवा के लिए समर्पित रहा। उनका सपना था कि समाज का कोई भी वृद्ध स्वयं को अकेला महसूस न करे और प्रत्येक घर में माता-पिता को सर्वोच्च सम्मान मिले। उन्होंने कहा कि मातृ-पितृ भक्ति दिवस केवल एक आयोजन नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति, परिवार व्यवस्था और संस्कारों को सशक्त बनाने का संकल्प है, जो नई पीढ़ी को अपने माता-पिता एवं बुजुर्गों के प्रति कर्तव्यबोध का संदेश देगा।

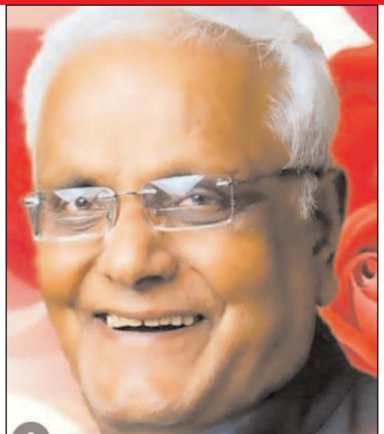

नरेला विधानसभा में तीन दिवसीय सेवा कार्यक्रमः नरेला विधानसभा के विभिन्न वार्डों में आज वृद्धजनों का सम्मान और अन्य सेवा कार्य आरंभ हुए जो ३ जून तक चलेंगे। आज वार्ड 76 (खेड़ापति हनुमान मंदिर), 79 (सरदार पटेल स्कूल), 75 (केनरा बैंक के सामने करोंद), 77 (शिव मंदिर पुलिस चौकी करोंद), 78 (पानी की टंकी के पास विश्वकर्मा नगर करोंद), 37 (मरई माता मंदिर द्वारका नगर) व 38 (साईंराम कॉलोनी) में वृद्धजनों का सम्मान किया गया। वार्ड 38, साईंराम कॉलोनी में भजन संध्या का आयोजन किया गया। 02 जून को वार्ड 71 (स्वामी विवेकानंद चौराहा), वार्ड 39-40 (चाणक्यपुरी), वार्ड 59 (अन्ना नगर), वार्ड 58 (सर्जना पार्क), वार्ड 44 (हनुमान मंदिर आचार्य नरेंद्र देव नगर), वार्ड 70 (पिंक टॉवर के सामने), वार्ड 69-41 (नर्मदा चौरहा) एवं वार्ड 36 (जैन मंदिर के पास शंकराचार्य नगर) में वृद्धजनों का सम्मान किया जाएगा। 03 जून को वार्ड 38 कैलाश सारंग पार्क एकतापुरी में सायं 07-00 बजे स्व. कैलाश नारायण सारंग की मूर्ति का अनावरण, भजन संध्या एवं भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

देशभर में सेवा और सम्मान कार्यक्रम

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा भी स्व. कैलाश नारायण सारंग की जयंती को देशभर में मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में मनाया जाएगा। विभिन्न राज्यों में वृद्धजनों के सम्मान के साथ-साथ सेवा, स्वास्थ्य, सहयोग एवं जनकल्याण के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

जनसेवा के प्रकल्प आज भी दे रहे हैं संस्कार और सेवा का संदेशः मंत्री श्री सारंग ने दैनिक निर्दलीय को बताया कि स्व. कैलाश सारंग ने अपने पैतृक ग्राम बरेली में वृद्धाश्रम की स्थापना कर बेसहारा बुजुर्गों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया। इसके अतिरिक्त रायसेन जिले के ग्राम घाटपिपरिया स्थित नर्मदा तट पर परिक्रमावासियों के लिए आश्रम की स्थापना कर सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके द्वारा प्रारंभ किए गए सेवा, संस्कार और जनकल्याण के अनेक प्रकल्प आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। मंत्री विश्वास सारंग ने सभी से अपील करते हुए कहा कि 2 जून को अपने माता-पिता एवं परिवार के सभी वरिष्ठजनों का सम्मान करें, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें तथा अपने बच्चों को भी सेवा, संस्कार और श्रद्धा की इस महान परंपरा से जोड़ें। उन्होंने आग्रह किया कि इस अवसर पर अपने अनुभव, छायाचित्र एवं वीडियो समाज संवाद माध्यम (सोशल मीडिया) पर सारंग मातृ-पितृ भक्ति दिवस के साथ साझा करें।

डॉ.शिव रचना साप्ताहिकी

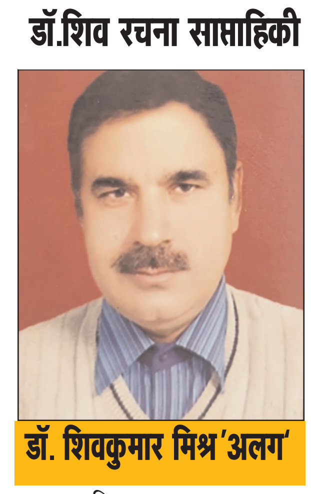

डॉ. शिवकुमार मिश्र 'अलग'

कणिका
पानी पीते थे जब घड़े का,
अंतर न था, छोटे बड़े का।
जब से पीरहे आर.ओ.का,
बिल चुका रहे हजारो का।

कणिका
पृथ्वी रूपी भाड़ में,
चल नहीं रही जुगाड़।
मटर,चने की तरह ही,
भुन रहा मानव आज।

कणिका
जब आता है बुरा वक्त,
सब कर देते हें परित्यक्त।
मिलने तक नहीं आते हैं,
जो कभी रहे थे आशक्त।

कणिका
पेड़ कहीं नहीं जाता,
पर फल लेके आता।
स्वयं कभी न खाता,
परमार्थ करने लाता।

कणिका
हर क्षण होता एक रण,
हरण के होते हैं चरण।
जीत हेतु अत्यंतजरूरी,
प्रभु की मिलना शरण।

राम
मानवता की खुली आंख,
के सबसे सुंदर सपने राम।
पुनः जन्म ले वही आ गए,
मध्य हमारे बन घनश्याम।

पूर्वजन्म में रखे थे फरसा,
अतः कहे गए परशुराम।
इससे पूर्व तुम्ही वामन थे,
बलि से मांगे तीन पैगाम।
मत्स्य,कूर्म,बाराह तुम्हीं थे,
और तुम्हीं नृसिंह भगबान।

हिरणाक्ष को मारा तुमने,
प्रह्लादजी को देने आराम।
कृष्ण के बाद तुम्ही गौतम हो,
कल्कि बन करोगे सब काम।
मानवता की खुली आंख के
सबसे सुंदर सपने राम।

नौ तपा
गंगदशहरा का दिन आता,
संग में लेकर आता नौतपा।

आग लगाता आया नौतपा,
सूरज संग में दिखता खपा।

ताल,तलैया सुखा देता सब,
जाड़ा,रुमाल न सकासुखा।

अमीरों के घर कुछ न तपा,
गरीब का घर दिखा जला।

दीनों पर दया दिखा नौतपा,
उन्हें जलाने में कुछ न रखा।

दया भाव को उर में रख के,
सृष्टि का कैसे ही वंश चला।

-ग्वालियर

जे.के.स्टील फर्नीचर
भोपाल
जीवन मारण
स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823

१. पेट्रोल पंप के सामने,चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल